विचार बिन्दु

आपत्ति मनुष्य बनाती है और संपत्ति राक्षस। –विक्टर ह्यूगो

क्या भारत में भ्रष्टाचार खत्म हो सकता है?

जब भी भारत की समस्याओं की बात होती है, कम से कम दो समस्याएं ऐसी हैं जिनकी चर्चा के बग़ैर यह बातचीत सम्भव हो ही नहीं पाती है। इनमें से एक है बेरोज़गारी और दूसरी है भ्रष्टाचार। यह तय कर पाना लगभग असंभव है कि इनमें से कौन-सी समस्या बड़ी और अधिक विकराल है। आज हम भ्रष्टाचार की समस्या पर विचार करते हैं। बजाय इस शास्त्रीय विमर्श में उलझने के कि भ्रष्टाचार किसे कहते हैं, उसकी परिभाषा क्या है, उसका उद्भव और विकास कैसे हुआ, हम अपनी चर्चा की शुरुआत अंत से करते हैं! क्या भारत में भ्रष्टाचार कभी ख़त्म हो सकता है? और जब यह सवाल सामने आता है तो मुझे अनायास हरिशंकर परसाई का एक कथन याद आ जाता है। मैं इस कथन को स्मृति के आधार पर उद्धृत कर रहा हूँ, इसलिए एक-दो शब्द इधर-उधर हो सकते हैं। उन्होंने लिखा है कि जिस देश में बग़ैर पढ़ाई किए परीक्षा देने जाता छात्र भगवान के मंदिर के आगे रुके और आंखें बंद करके, हाथ जोड़कर भगवान से विनती करे कि हे भगवान, मुझे पास कर देना। मैं सवा पांच आने (अबरेट बदल चुका है!) का प्रसाद चढ़ाऊंगा, उस देश में भ्रष्टाचार कभी ख़त्म नहीं हो सकता।

असल में हम अपने चारों तरफ़ नज़र डालते हैं तो पाते हैं कि हमने भ्रष्टाचार को शिष्टाचार के पर्याय के रूप में स्वीकार कर लिया है। यह हमें तभी असहज करता है जब हमें अपनी औकात के बाहर जाकर किसी को कुछ देना पड़ता है। वैसे भ्रष्टाचार की परिधि में केवल आर्थिक दुष्कर्म ही नहीं आता है, लेकिन अगर हम उन सबके विस्तार में जाएंगे तो हमें वे पंक्तियां याद आ जाएंगी जो धर्मवीर भारती ने अपने विख्यात नाटक 'अंधा युग' में लिखी थीं। उनके शब्द हैं:– ''हम सबके दामन पर दाग,/ हम सबकी आत्मा में झूठ,/ हम सबके माथे पर शर्म,/ हम सबके हाथों में टूटी तलवारों की मूठ।'' कानून को धता बताना, व्यवस्था को चकमा देना, अनधिकार कुछ हासिल कर लेना – ये सब हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के हिस्से हो चले हैं और हममें से शायद ही कोई इनसे बचा हो। लेकिन हमें अपना किया ग़लत काम प्राय: नज़र नहीं आता। अगर कोई उस तरफ संकेत कर भी दे तो हमारे पास उसे उचित ठहराने वाला कोई न कोई जवाब तैयार होता है। दो बहुत छोटे उदाहरण याद कर लें। एक है यातायात के नियमों का पालन और दूसरा है अपने गली-मोहल्लों में होने वाला अतिक्रमण। ये भी भ्रष्ट आचरण के उदाहरण हैं, लेकिन हम में से बहुत सारे ऐसा नहीं मानेंगे। जैसे कार्यालय में कोई काम करवाना हो तो सम्बद्ध कार्मिक को मिठाई या मेवे का डिब्बा देना, काम के महत्व के अनुरूप सस्ता या महंगा उपहार देना हमें भ्रष्टाचार नहीं शिष्टाचार, कृतज्ञता ज्ञापन लगेगा। ऐसे अनेक प्रसंग याद कर लीजिए।

यह एक त्रासद सत्य है कि अब बड़े से बड़े भ्रष्टाचार का समाचार हमें विचलित भी नहीं करता है। पिछले दिनों जब बड़े सरकारी भ्रष्टाचारों की चर्चा हुई तो उन चर्चाओं से हममें से बहुत कम लोग असहज हुए। हमने जैसे मान लिया कि अगर किसी ने पैसा लिया तो यह उसका हक़ था। अगर हमें किसी कार्यालय में कोई काम करवाना होता है तो हम मानकर ही चलते हैं कि हमें कुछ देना पड़ेगा। बल्कि हालत तो यह है कि अगर कोई कुछ न ले तो हमें शक़ होता है कि हमारा काम होगा भी या नहीं! कुल मिलाकर हमने इसे स्वीकार कर लिया है। इसलिए अब तो धीरे-धीरे भ्रष्टाचार हमारे विमर्श से ही बाहर होता जा रहा है। क्या पता दो-तीन बरस बाद हम यह भूल ही जाएं कि कभी हमारे यहां यह एक बड़ा मुद्दा था।

इस बात को स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए कि भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे की तरफ बहता है। ऐसे में जो पैसा ऊपर से बहता है, वह नीचे तक अपनी दिशा खोज लेता है। ऊपर में भी उसे राजनीति सर्वाधिक प्रिय है। चुनाव लगातार महंगे होते जा रहे हैं। जो लोग बहुत बड़ी धनराशि खर्च करके चुनाव लड़ते और जीतते हैं वे भला अपने निवेश को ब्याज़ सहित वसूल करने के प्रयास क्यों नहीं करेंगे? राजनीति में आते ही लोगों के वैभव में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कुछ तो कहती है।

वैसे इस बात को भी स्वीकार किया जाना चाहिए कि आम नागरिक के जीवन में तकनीक ने बहुत सारे मामलों में भ्रष्टाचार का उन्मूलन भी किया है। ऑनलाइन प्रक्रियाओं ने मानवीय संपर्क की संभावनाओं को घटाकर भ्रष्टाचार पर भी प्रहार किया है। लेकिन इससे यह न समझ लिया जाए कि भ्रष्टाचार पूरी तरह ख़त्म हो गया है। असल में उसके रूप अब बदल गए हैं। और यह उसका स्वभाव भी है। वह समय-समय पर नए अवतार धारण करता रहता है। अब छोटी रिश्वतों की जगह वह नीतिगत फैसलों, ठेकों और अनुमोदनों में अपनी जगह बना चुका है।

इस बात को स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए कि भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे की तरफ बहता है। ऐसे में जो पैसा ऊपर से बहता है, वह नीचे तक अपनी दिशा खोज लेता है। ऊपर में भी उसे राजनीति सर्वाधिक प्रिय है। चुनाव लगातार महंगे होते जा रहे हैं। जो लोग बहुत बड़ी धनराशि खर्च करके चुनाव लड़ते और जीतते हैं वे भला अपने निवेश को ब्याज़ सहित वसूल करने के प्रयास क्यों नहीं करेंगे? राजनीति में आते ही लोगों के वैभव में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कुछ तो कहती है। राजनीतिक दलों को दिये जाने वाले चंदे की गोपनीयता यह भी साफ़ कर देती है कि शासन की रुचि भी भ्रष्टाचार उन्मूलन में सतही ही है। इसके अलावा, हमारे देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ अनगिनत कानून हैं, न्यायालय हैं, नियम हैं और हैं जांच एजेंसियां। और इन सबके बावजूद नाला वहीं गिरता है जहां वह गिरना चाहता है। राजस्थान की एक लोक कहावत याद आती है जिसे जस का तस तो नहीं लिख सकता, लेकिन उसका भावार्थ यह है कि स्त्रियां रोती रहेंगी और अतिथि दावत उड़ाते रहेंगे। एजेंसियों और भ्रष्टों में एक मैत्रीपूर्ण जुगलबंदी चलती रहती है। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व! लेकिन आए दिन हम देखते हैं कि आज जो व्यक्ति भ्रष्ट बताया जाता है कुछ समय बाद वही बाइज़्ज़त बरी हो जाता है। इधर एक 'वॉशिंग मशीन' भी बहुचर्चित है। मेरे खयाल से इशारा ही काफ़ी है।

भ्रष्टाचार के बारे में एक रोचक बात यह भी है कि हमें सिर्फ और सिर्फ दूसरों का भ्रष्टाचार नज़र आता है और व्यथित करता है। हमें यह तो नज़र आता है कि कोई हमसे रिश्वत मांग रहा है, लेकिन इस बात को हम बड़ी आसानी से नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि बहुत बार अकरणीय काम को करवाने के लिए हम ख़ुद आगे बढ़कर रिश्वत देने का प्रस्ताव करते हैं। यह तो बहुत आम है कि किसी छोटी-मोटी ग़लती पर जब चौराहे वाला ट्रैफिक सिपाही हमारा चालान करना चाहता है तो हम चालान करवाना मूर्खतापूर्ण मानते हुए उसकी मुट्ठी गरम करके मुक्ति पाने को अपनी समझदारी मानते और बखानते हैं।

सवाल यह है कि क्या यह सब ऐसे ही चलता रहेगा? क्या यह स्थिति बदल सकती है? मेरा जवाब है, हां एक हद तक तो बदल ही सकती है। इसके लिए पहला काम तो यही किया जाना चाहिए कि राजनीतिक दलों को दिये जाने वाले चंदे को पूरी तरह पारदर्शी बनाया जाए। अगर स्त्रोत साफ़ होगा तो प्रवाह भी साफ़ होगा। दूसरी बात यथासंभव अधिकाधिक काम तकनीक के सुपुर्द किए जाएं। पूर्ण डिजिटल ट्रैकिंग को लागू किया जाए। तीसरी बात प्रक्रियाओं को सरल किंतु कठोर और निरपवाद बनाया जाए ताकि यह स्पष्ट हो कि काम हो सकता है या नहीं हो सकता है। किसी की कृपा की संभावनाओं को ख़त्म करने की दिशा में आगे बढ़ा जाए। हर काम के लिए समय सीमा निर्धारित व घोषित की जाए और इसका पालन न होने पर समुचित दण्ड दिया जाए।

लेकिन इन बातों से भी ज़्यादा ज़रूरी है भ्रष्टाचार के बारे में समाज की सोच में बदलाव लाना। सब चलता है, इतना तो चलता है, आटे में नमक के बराबर, बेचारे की तनख़्वाह कम है, हम तो जैसे-तैसे अपना काम निकलवा ही लेंगे – जैसी मानसिकता को ख़त्म करने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएं। शिक्षा की बड़ी भूमिका हो सकती है। सामाजिक संगठनों को भी सक्रिय होना होगा। कर्मचारी संगठनों को भी आगे आना होगा। यह ऐसा काम नहीं है जो पलक झपकते ही हो जाएगा। इसके लिए एक दूरगामी योजना बनाकर उसको पूरी निष्ठा से क्रियान्वित करना होगा। लेकिन कहीं से तो शुरुआत करनी ही होगी।

भ्रष्टाचार बहुत बड़ी बीमारी है। लेकिन यह उन बीमारियों की तरह नहीं है जो किसी एक दवा या इंजेक्शन से निर्मूल हो जाती हैं। इसकी प्रकृति बहुत भिन्न है। और इसलिए इसका उपचार भी भिन्न ही होगा। भ्रष्टाचार का अंत अगर कानून से, किसी आदेश से होना होता तो कभी का हो गया होता। सच तो यह है कि हम भ्रष्टाचार को कोसते-कोसते खुद वही करने लगते हैं। हां, अपने भ्रष्टाचार को हम व्यावहारिकता या जुगाड़ जैसा अपेक्षाकृत शालीन नाम दे देते हैं। यह मानसिकता बदलेगी तो सब ठीक होने लगेगा। जब हम यह हिम्मत करेंगे कहो चाहे जो हो जाए, हम ग़लत तरीका नहीं पनाएंगे, तो चीज़ें अपने आप बेहतर होने लगेंगी। कहते हैं ना कि एक हाथ से ताली नहीं बजती है। भ्रष्टाचार के लिए भी दोषी एक नहीं, दोनों पक्ष होते हैं। जब एक पक्ष उससे किनारा कर लेगा तो दूसरा पक्ष स्वत: निष्क्रिय होने लगेगा।

लेकिन ऐसा कब होगा – पता नहीं!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

पुलिस से अपेक्षाएं अनंत और उनके मानवाधिकारों का अंत

सुनील दत्त गोयल

हम पुलिस से हर परिस्थिति में सभ्यता, सेवा और सुरक्षा की उम्मीद तो करते हैं, लेकिन क्या कभी सोचते हैं कि इस वर्दी के पीछे जो इंसान खड़ा है, उसकी अपनी ज़िंदगी कैसी है?

आप सड़क पर गाड़ी चला रहे हैं और सामने से ट्रैफिक पुलिस का एक सिपाही आता दिखाई देता है। वह शायद अपनी ड्यूटी बदलने जा रहा हो, लेकिन आपका दिल धक-धक करने लगता है कि कहीं चालान न काट दे। ठीक इसी तरह अगर खाकी वर्दी में कोई सामान्य पुलिसकर्मी आपकी तरफ़ बढ़ता दिखे तो ज़ेहन में पहला ख़याल सुरक्षा का नहीं, डर का आता है। सवाल यह है कि आख़िर ऐसा क्यों है? कमी पुलिस की है, या उस पूरे सिस्टम की जिसने पुलिस को एक भूखे शिकारी शेर की तरह खड़ा कर दिया है, जिसे जब चाहा इस्तेमाल किया, जब चाहा दुरुपयोग किया?

इसकी शुरुआत होती है राजनीति, नौकरशाही और हमारी सरकारों की उस मानसिकता से, जिसने पुलिस बल को कभी एक स्वतंत्र सेवा-संस्थान नहीं बनने दिया। सत्ता के गलियारों में बैठे लोगों ने पुलिस को एक ऐसे औज़ार की तरह रखा है जो हर आदेश पर झुकने के लिए 24 घंटे, 365 दिन तैयार रहना चाहिए। अफसरों और नेताओं की हर ग़ैर-क़ानूनी फ़रमाइश पर पुलिस को झुकना पड़ता है, और यही वजह है कि आम जनता के बीच पुलिस पर विश्वास कभी क़ायम नहीं हो पाता। हिंदुस्तान के कोने-कोने में यही धारणा घर कर गई है कि पुलिस सिर्फ़ पैसे वालों की है, ताकतवरों की है, सरकार की है – ग़रीब और सामान्य आदमी की नहीं।

लेकिन क्या कभी हमने सोचा कि सरकार ख़ुद पुलिस को क्या देती है? कभी किसी पुलिस चौकी या थाने की बैरकों में जाइए। रात के वक़्त वहाँ का नज़ारा देखिए। सर्दी, गर्मी, बरसात – तीनों मौसमों में इन बैरकों की दुर्दशा इतनी ख़राब होती है कि कोई आम आदमी वहाँ एक रात गुज़ारने की सोच भी नहीं सकता। खुले में सोना, मच्छरों का काटना, न गर्मी से राहत, न ठंड से बचाव। जहाँ तक मेरा ख़ुद का पिछले लगभग 40 वर्षों का विभाग से जुड़ाव रहा है, मैं दावे से कह सकता हूँ कि शायद ही कोई पुलिसकर्मी रात को चैन की नींद सो पाता हो। समय पर छुट्टी मिले, यह तो दूर की कौड़ी है। घर में कोई इमरजेंसी हो, किसी का जन्मदिन हो, शादी की सालगिरह हो या फिर अपने किसी की मौत – हर हालत में छुट्टी के लिए उन्हें ऐसे संघर्ष करना पड़ता है जैसे कोई जंग जीत रहे हों। लॉ एंड ऑर्डर से लेकर नोटिस तामील कराने तक का सारा बोझ उन्हीं पर है, और सरकार या उच्च अधिकारी इस साधारण-सी बात को भी नहीं समझते कि इन दोनों तरह के कार्यों का विभाजन क्यों ज़रूरी है।

उनकी ड्यूटी सड़कों पर लगा दी जाती है। पीने का पानी समय पर नहीं मिलता, खाने का कोई ठिकाना नहीं और अगर भोजन मिल भी जाए तो वह उस स्तर का नहीं होता जिसकी एक पूरे दिन शारीरिक-मानसिक श्रम करने वाले इंसान को ज़रूरत होती है। अब आप ख़ुद सोचिए – एक भूखा-प्यासा, बिना पूरी नींद लिए, घंटों से खड़ा हुआ इंसान, जो अपने ही विभाग से उपेक्षित और परेशान है, वह आपसे सभ्यता का व्यवहार कैसे कर पाएगा? आप कल्पना कीजिए कि बारिश में भी कोई सिपाही भीग जाता है, तो उसके कपड़े कब बदलेंगे? जब वह घर जाएगा–और घर कब जाएगा, यह उसे खुद भी पता नहीं होता। वह सड़क के बीच में पेड़ की छांव ढूंढता रहता है, जो आजकल संभव नहीं है, तो कहीं रास्ते में ही खड़ा रहता है। यह हमारी गैर-इंसानियत का एक जीता-जागता उदाहरण है। फ़ील्ड में काम कर रहे पुलिसकर्मियों की जीवन-स्थितियाँ दयनीय हैं। न अच्छे वाहन हैं, चाहे दोपहिया की बात हो या चार पहिया की, और अगर हैं भी तो उनकी मरम्मत, रख-रखाव और डीज़ल-पेट्रोल का पैसा अक्सर उनके पास नहीं होता। आज भी देश में हज़ारों पुलिस चौकियाँ और थाने ऐसे हैं जो टेंट, तंबू या कच्चे ढाँचों में चल रहे हैं। आज पुलिस विभाग में काम करने वाली महिलाओं की समस्याओं को समझना और उनके लिए बेहतर व्यवस्था करना बेहद ज़रूरी है। उनकी ड्यूटी पर आने का समय तय होता है, लेकिन घर लौटने का कोई निश्चित समय नहीं होता, जिससे छोटे बच्चों वाली महिला कर्मियों को हमेशा चिंता रहती है कि बच्चों को किसके भरोसे छोड़ें। नौकरी और परिवार की दोहरी जिम्मेदारी उनके लिए बड़ी चुनौती बन जाती है। इसके अलावा कई पुलिस थानों और कार्यालयों में महिलाओं के लिए सही शौचालय, आराम की जगह और अन्य जरूरी सुविधाओं का भी अभाव है, जबकि यह उनकी गरिमा और मूलभूत अधिकारों से जुड़ा विषय है। जब महिला पुलिसकर्मी दिन-रात समाज की सुरक्षा में लगी हैं, तो सरकार और अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि उन्हें सुरक्षित और सम्मानजनक कार्य वातावरण उपलब्ध कराया जाए।

कोरोना काल के लॉकडाउन का वह दौर याद कीजिए, जब सड़कों पर सन्नाटा था। पुलिस के जवान बिल्कुल बेहाल स्थिति में घंटों धूप में तप रहे थे। उस पूरी तरह बंद पड़ी मोबिलिटी के बीच उन्हें पीने का पानी तक नसीब नहीं था। आज भी ट्रैफ़िक सिपाही सड़क किनारे किसी पेड़ की छाँव तलाशते खड़े मिल जाएँगे। और हम कल्पना करते हैं कि वे बेहतरीन ट्रैफ़िक बंदोबस्त करेंगे? आख़िर वे भी तो इंसान हैं। उनकी ड्यूटी के कोई तय घंटे नहीं। आठ घंटे की जगह सोलह-सोलह, कभी चौबीस घंटे से भी ज़्यादा खड़े रहना पड़ता है क्योंकि दूसरी शिफ़्ट का रिप्लेसमेंट ही नहीं आता। बिना कपड़े बदले, बिना भोजन, बिना नींद के वह आदमी ड्यूटी को ठीक से निभाएगा, यह अपेक्षा ही बेमानी है।

भारत में पुलिस का कांस्टेबल एवं फील्ड में कार्यरत सभी अधिकारी इस पूरे सिस्टम की रीढ़ हैं। और अगर रीढ़ ही कमज़ोर होगी, तो शरीर कैसे खड़ा रहेगा? हम मानवाधिकार आयोग की बातें बड़े ज़ोर-शोर से करते हैं, लेकिन क्या कभी उस आयोग के अधिकारियों ने थाने की बैरक में सो रहे सिपाही के मानवाधिकारों के बारे में सोचा है?

इस संदर्भ में दो क़िस्से मुझे हमेशा याद आते हैं, दोनों लगभग 25-30 साल पुराने। एक बार मैं एक पुलिस अधिकारी के पास चाय पी रहा था कि तभी मानवाधिकार आयोग में काम करने वाले एक अधिकारी का फ़ोन आता है। उस ज़माने में वीडियो कैसेट किराए पर लेने का रिवाज़ था। उन्होंने शुक्रवार को एक कैसेट ली, लेकिन सोमवार तक लौटा नहीं पाए। दुकानदार ने पूरा किराया माँगा तो यह अधिकारी भड़क गए। उन्होंने पुलिस अधिकारी पर दबाव डाला कि – उस दुकानदार को पकड़ो, मारो-पीटो, जो मर्ज़ी करो, मैं तो सिर्फ़ बीस रुपए दूँगा। दूसरी घटना एक और उच्च अधिकारी के घर की है, जहाँ घरेलू नौकर ने कुछ चोरी कर ली थी। उन्होंने नज़दीकी थाने को सीधा निर्देश दिया – अनाधिकृत रूप से गिरफ़्तार करो, हमारा सामान बरामद करो, और सब कुछ पुलिस रिकॉर्ड से बाहर रहे। अब बताइए, जब कथित मानवाधिकारों की बात करने वाले और सिस्टम के उच्च पदस्थ लोग ही पुलिस को क़ानून और न्याय के ख़िलाफ़ निर्देश देते हैं, तब हम उस मामूली कांस्टेबल से प्रतिबद्धता की उम्मीद कैसे रख सकते हैं? यह बात अब साफ़ हो चुकी है कि पुलिस की कार्यशैली पर सिर्फ़ पुलिस जिम्मेदार नहीं है। पीछे राजनीतिक दबाव, अप्रत्याशित हस्तक्षेप और संसाधनों की कमी का एक गहरा साया है। जब तक हम पुलिस थानों का नवीनीकरण नहीं करेंगे, उनके काम के घंटे तय नहीं करेंगे, छुट्टियों की गारंटी नहीं देंगे, तब तक हम उनके मानसिक स्वास्थ्य को कैसे दुरुस्त रख सकते हैं? इन हालात में गंभीर मानसिक बीमारियाँ, एंग्ज़ाइटी, डिप्रेशन और आत्महत्या जैसी प्रवृत्तियाँ आम होती जा रही हैं। जब इंसान को समय पर खाना-पीना नहीं मिलता, सोने का वक्त नहीं मिलता, घर-परिवार के लिए सुकून के पल नसीब नहीं होते, तो मानसिक तनाव में आना उसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया है – पुलिसकर्मी कोई रोबोट तो हैं नहीं।

यदि सिस्टम नेतृत्व प्रदान करे तो पुलिसिंग का स्वरूप पूरी तरह से बदला जा सकता है। राजस्थान कैडर के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी श्री दिनेश एम.एन. इसके सबसे मुखर उदाहरण हैं, जिन्होंने एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स (एजीटीएफ) के प्रमुख के रूप में हाल ही में ऑपरेशन प्रहार का नेतृत्व करते हुए अमरजीत बिश्नोई और सुधा कँवर को इटली में डिटेन किया गया, जबकि आदित्य जैन को दुबई से भारत प्रत्यर्पित कराया गया। अमेरिका में भी दो अपराधियों को हिरासत में लिया गया है, जिनके प्रत्यर्पण की प्रक्रिया जारी है। विदेशों में बैठे गैंगस्टर्स और अपराधियों के खिलाफ इंटरपोल के माध्यम से रेड कॉर्नर नोटिस जारी करवाकर उन्हें भारत लाने के लिए भी वे निडर होकर लगातार प्रयासरत हैं। एसीबी में रहते हुए उन्होंने कई बड़े वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों में सख्त कार्रवाई की और हमेशा भ्रष्टाचार के खिलाफ अडिग रहे। राजस्थान में वे सिंघम जैसी पहचान वाले अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं। भ्रष्टाचार और संगठित अपराध के खिलाफ अपनी सख्त छवि के लिए मशहूर श्री दिनेश एम.एन. जी को हाल ही में राजस्थान पुलिस के आतंकवाद-निरोधी दस्ते (एटीएस) और एजीटीएफ दोनों की कमान सौंपी गई है। इसी तरह, 2014 बैच के युवा आईपीएस अधिकारी श्री करण शर्मा भी अपनी कार्यकुशलता से सुर्खियों में रहते हैं। कोटा ग्रामीण के पुलिस अधीक्षक रहते हुए उन्होंने ऑपरेशन एंटीवायरस एंड साइबर स्ट्राइक चलाकर 37.62 लाख रुपये से अधिक मूल्य के 198 खोए-चोरी हुए मोबाइल फोन बरामद कर नागरिकों को लौटाए, जो पीड़ितों के प्रति उनकी संवेदनशीलता और तकनीकी दक्षता को दर्शाता है।

इसी पृष्ठभूमि में सवाई माधोपुर की पुलिस अधीक्षक सुश्री ज्येष्ठा मैत्रेयी (आईपीएस) द्वारा हाल ही में जारी एक आदेश ने उम्मीद जगाई है। उन्होंने निर्देश दिया कि पुलिस कर्मियों को उनके या परिवार के किसी सदस्य के जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ, पर्व-त्योहारों और मांगलिक कार्यों पर आवेदन करने की स्थिति में प्राथमिकता से छुट्टी मिला करेगी। मैं इस भावपूर्ण पहल के लिए उन्हें सलाम करता हूँ। उन्होंने ज़मीनी हक़ीक़त को समझा और उसका समाधान निकाला।

पुलिस विभाग में कई ऐसे अधिकारी भी हैं जिन्होंने अपने कार्य और व्यवहार से एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत किया है। जैसे श्री अवनीश शर्मा (आईपीएस) एसपी बूंदी, भूपेंद्र कुमार दक (आईपीएस, रिटायर्ड डीजीपी), धर्मेंद्र यादव (आईपीएस), नरोत्तम वर्मा (आरपीएस), यशपाल शर्मा (आरपीएस, रिटायर्ड), विजय सिंह मीणा (आरपीएस), बजरंग सिंह शेखावत (आरपीएस), ठाकुर चंद्रशील सिंह (आरपीएस), नितिराज सिंह शेखावत (आरपीएस) सी पी शर्मा (आरपीएस) जैसे अधिकारी अपनी कर्तव्यनिष्ठा, संवेदनशीलता और ईमानदारी के लिए जाने जाते हैं। इन अधिकारियों ने यह सिद्ध किया है कि सीमित संसाधनों और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद समर्पण के साथ कार्य करते हुए पुलिस की छवि को सकारात्मक दिशा दी जा सकती है।

मेरी सभी पुलिस अधिकारियों से गुज़ारिश है कि वे अपने अधीनस्थों की असल समस्याओं को गहराई से देखें। वे समझते तो सब हैं, लेकिन या तो कर नहीं पाते, या करने की इच्छाशक्ति नहीं जुटा पाते, या फिर कोई अदृश्य शक्तियाँ उनके हाथ रोक लेती हैं। ये अधिकारी इस बात के जीवंत प्रमाण हैं कि संसाधनों की कमी के बावजूद यदि इच्छाशक्ति, साहस और जनता के प्रति सेवा-भाव प्रबल हो तो पुलिस विभाग में बेहतरीन काम की अपार संभावनाएं हैं, और यही चेहरे उस भरोसेमंद और सम्मानित पुलिस बल के निर्माण की नींव रख सकते हैं जिसकी हर नागरिक को तलाश है। लेकिन इस पूरी बहस का दूसरा पहलू यह भी है कि पुलिस को अपनी छवि बदलने की भी उतनी ही ज़रूरत है जितनी सरकार को व्यवस्था सुधारने की। क़ानून का डर दिखाने वाली यह वर्दी जब लोगों के मन में सम्मान और सुरक्षा के भाव जगाए, तभी बात बनेगी। फ़िलहाल हालत यह है कि पुलिसकर्मी को देखकर आम आदमी सहम जाता है, जबकि होना यह चाहिए कि वह निश्चिंत हो जाए। यह बदलाव पुलिस को अपने सामाजिक अनुकरण से लाना होगा। बहुत से ट्रैफ़िक सिपाहियों को ट्रैफ़िक नियमों की ख़ुद सटीक जानकारी नहीं होती, उनके पास केवल चालान काटने या डाँट-फटकार लगाने का अधिकार रह जाता है। इससे पुलिस की छवि और ख़राब होती है। नियमित प्रशिक्षण, तकनीकी ज्ञान का अद्यतनीकरण और कुछ देर का मानसिक विराम – ये सब अब वैकल्पिक नहीं, अनिवार्य हैं। प्रशिक्षण के बहाने ही सही, पुलिसकर्मियों को थोड़ी राहत, नई जानकारी और ख़ुद को बेहतर करने का अवसर तो मिलेगा।

फिर, आम जनता के बीच पुलिस को लेकर जो अविश्वास और भय है, उसे दूर करना सिर्फ़ सिस्टम का नहीं, बल्कि स्वयं पुलिसकर्मियों का भी दायित्व है। आए दिन यह आरोप लगते हैं कि भू-माफिया, बजरी माफिया, रिकवरी एजेंट, शराब माफिया, ड्रग माफिया और ज़मीन के अवैध निर्माण या कब्ज़े जैसे काम बिना पुलिस की मदद के नहीं होते। पुलिस को ऐसे आरोपों से अपनी भूमिका को स्पष्ट करना होगा। अभी तो स्थिति यह है कि पुलिस विभाग के अंदर ही मुखबिर भेजिए के रूप में काम करते हैं और माफियाओं से जुड़े हुए हैं अक्सर यह खबरें अखबारों में पढ़ने को मिल जाती है कई कर्मचारी तो तेरे दोष इतने दुशासी होते हैं कि अपने वरिष्ठ अधिकारियों की भी सूचनाओं निकालने या लिख करने में गुरेज नहीं करते यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। यह एक दुष्चक्र है – राजनीतिक दुरुपयोग और संसाधनों की कमी पुलिस को बीमार, हताश और असंवेदनशील बनाती है, फिर जनता उनसे डरती और नफ़रत करती है, और उसी नकारात्मक छवि का फ़ायदा उठाकर माफिया और भ्रष्ट तत्व पुलिस को और कमज़ोर करते हैं। इस चक्र को तोड़ने की शुरुआत पुलिस को सम्मान और मूलभूत सहूलियतें देने से होगी, ताकि वह अपने पेशेवराना आचरण से जनता का भरोसा जीत सके।

अंतत:, पुलिस और जनता के बीच विश्वास का यह संकट कोई एकतरफ़ा समस्या नहीं है। यह समस्याओं की एक ऐसी भूलभुलैया है जहाँ सबसे पहले हमें पुलिस को एक थके हुए, भूखे और मानसिक तनाव झेलते हुए इंसान के रूप में देखना होगा। जब तक उसे मानवीय परिस्थितियाँ नहीं देंगे, तब तक उससे सेवा, शालीनता और कर्तव्यनिष्ठा की अनंत अपेक्षाएँ करना एक क्रूर मज़ाक ही होगा। एक स्वस्थ, शिक्षित और सम्मानित पुलिस बल ही किसी सुरक्षित, न्यायप्रिय और सभ्य समाज की बुनियाद रख सकता है। इस दिशा में सरकार से लेकर हम आम नागरिकों तक – सबको अपनी सोच और व्यवहार बदलना होगा।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री

बाड़मेर-हरिद्वार समर हॉलीडे स्पेशल ट्रेन आज से

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान से हरिद्वार जाने वाले यात्रियों के लिए राहत की खबर है। गर्मी की छुट्टियों में बढ़ती भीड़ को देखते हुए उत्तर-पश्चिम रेलवे ने बाड़मेर-हरिद्वार-बाड़मेर के बीच द्वि-साप्ताहिक समर स्पेशल ट्रेन चलाने का फैसला किया है। यह ट्रेन सोमवार 11 मई से पटरियों पर दौड़ने लगेगी और जुलाई के मध्य तक कुल 20-20 फेरे लगाएगी।

जोधपुर मंडल के डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि ग्रीष्मावकाश के दौरान हरिद्वार रूट पर यात्रियों का दबाव काफी बढ़ जाता है। इसी को देखते हुए रेलवे ने यह स्पेशल ट्रेन शुरू की है ताकि यात्रियों को कन्फर्म सीट मिल सके और उनका सफर सुगम हो। ट्रेन जोधपुर, मेड़ता रोड, नागौर और बीकानेर के रास्ते चलेगी, जिससे इन शहरों के यात्रियों को भी सीधी सुविधा मिलेगी।

उन्होंने बताया कि ट्रेन संख्या 04811 बाड़मेर-हरिद्वार समर स्पेशल 11 मई से 16 जुलाई तक हर सोमवार और गुरुवार को चलेगी। यह ट्रेन बाड़मेर से तड़के 4.15 बजे रवाना होगी और बायतु, बालोतरा, समदड़ी व लूणी होते हुए सुबह 8.40 बजे जोधपुर पहुंचेगी। दस मिनट के ठहराव के बाद 8:50 बजे आगे के लिए रवाना हो जाएगी। मेड़ता रोड, नागौर, नोखा, बीकानेर, सूरतगढ़, हनुमानगढ़, बठिंडा और अंबाला कैंट होते हुए यह ट्रेन अगले दिन सुबह 4.10 बजे हरिद्वार पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 04812, हरिद्वार-बाड़मेर स्पेशल 12 मई से 17 जुलाई तक हर मंगलवार और शुक्रवार को चलेगी। हरिद्वार से सुबह 5.15 बजे चलेगी और सहारनपुर, अंबाला, बठिंडा, हनुमानगढ़, बीकानेर व नागौर के रास्ते रात 2.30 बजे जोधपुर पहुंचेगी। यहां से 2.40 बजे रवाना होकर सुबह 7.30 बजे बाड़मेर पहुंच जाएगी।

सीनियर डीसीएम हितेश यादव के अनुसार इस ट्रेन का ठहराव मार्ग के 24 प्रमुख स्टेशनों पर रहेगा, जिनमें गोटन, लालगढ़, लूनकरनसर, पीलीबंगा, मंडी डबवाली, संगरिया और धुरी भी शामिल हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए ट्रेन में कुल 18 डिब्बे लगाए गए हैं। इनमें एक सेकंड एसी, छह थर्ड एसी, पांच स्लीपर, चार जनरल और दो गार्ड कोच शामिल हैं, ताकि हर वर्ग के यात्री आराम से सफर कर सकें।

श्रीगंगानगर, जोधपुर जिले में गर्मी से आमजन परेशान

श्रीगंगानगर/जोधपुर, (निसं)। वेस्टर्न डिस्टरबेंस के असर के खत्म होते ही श्रीगंगानगर जिले में तेज गर्मी का दौर शुरू हो गया है। दोपहर में चलने वाली गर्म हवाओं ने दिन का तापमान 40 डिग्री के पार पहुंचा दिया है। इसी बीच मौसम विभाग ने जिले में 12 मई तक हीटवेव का अलर्ट जारी कर दिया है।

मौसम राडार स्टेशन, श्रीगंगानगर के पर रविवार सुबह न्यूनतम तापमान 27 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। शनिवार को न्यूनतम तापमान 24.5 डिग्री और अधिकतम तापमान 41.0 डिग्री रहा। शुक्रवार को न्यूनतम 22.9 डिग्री और अधिकतम 40.0 डिग्री तापमान दर्ज किया गया था। रविवार सुबह से धूलभरी आंधी भी चली। मौसम विभाग ने पश्चिमी राजस्थान के जिलों में अगले दो-तीन दिन तेज हीटवेव चलने का ऑरेंज और येलो अलर्ट जारी किया है। रविवार को जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर और बीकानेर में हीटवेव का येलो अलर्ट जारी किया गया है। पूर्वी राजस्थान में हालांकि राहत की संभावना है। यहां कुछ जगहों पर आंधी-बारिश, बादल छाने और कहीं-कहीं हल्की बारिश की संभावना जताई गई है।

गर्मी के असर से जोधपुर में आम जनजीवन प्रभावित : जोधपुर शहर में गर्मी के असर से आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। रविवार को अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। धूप की वजह से दिन में सड़कों पर पैदल चलने के साथ गाड़ियों पर जाना भी मुश्किल हो रहा है। लोग धूप से बचाव को लेकर तरह- तरह के जतन करते नजर आए। वहीं जोधपुर के नई सड़क चौराहे स्थित ट्रैफिक सिग्नल को रेड लाइट फ्री कर दिया गया। ऐसे में ट्रैफिक लाइट पर वाहन बिना रुके निकलते रहे।

मौसम विभाग के अनुसार जोधपुर में 11 से 13 मई तक हीट वेव की चेतावनी जारी की गई है। जोधपुर शहर में अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दिनभर तेज धूप के चलते दिन में सड़कें सूनी नजर आई। वहीं जोधपुर के नई सड़क चौराहे स्थित ट्रैफिक सिग्नल को रेड लाइट फ्री कर दिया गया। आम दिनों में यहां ट्रैफिक पर रेड लाइट होने से लोगों को धूप में खड़े रहकर परेशान होना पड़ता था, लेकिन रविवार को सिग्नल फ्री होने से लोगों को रुकना नहीं पड़ा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 11 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2083, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 1:29 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 1:04 तक, गर करण दिन 3:25 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह कुमार योग रात्रि 1:29 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 3:09 से आरम्भ होगी। मंगल अश्विनी मेष में दिन 12:39 पर प्रवेश करेगा। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:25 तक, शुभ 9:04 से 10:44 तक, चर 2:03 से 3:42 तक, लाभ-अमृत 3:42 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:46, सूर्यास्त 7:01

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों का निपटारा हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना बनेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
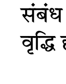
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आय में वृद्धि होगी।

धनु

परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
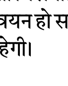
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
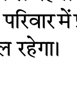
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में सफल रहेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

मीन

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।